भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

27.9.2014

वरिष्ठ कम्युनिस्ट और जननेता कामरेड एम.टी. खान को श्रद्धांजलि!

आन्ध्रप्रदेश (आज का तेलंगाना सहित) में क्रान्तिकारी लेखक और मानवाधिकार संगठनों के संस्थापकों में से एक कामरेड एम.टी. खान का 2014 अगस्ट 20 तारीख को निधन हो गया। उनके मृत्यु से भारत की माओवादी आन्दोलन ने एक गहरे दोस्त को खो दिया। भाकपा(माओवादी), की केन्द्रीय कमेटी सिर झुकाकर उनको लाल श्रद्धांजलि अर्पित करती है। उनके परिजनों और मित्रों को गहरी सहानुभूति व्यक्त करती है। उनके मृत्यु से जनवादी और क्रान्तिकारी संगठनों के दुख में हमारी पार्टी शरीक हो रही है।

खान साहेब के नाम से परिचित मुहम्मद ताजुद्दीन का हैदराबाद के पुराना पूल दरवाजा के पास 1935 में जन्म हुआ था। सिटी कॉलेज में हाई स्कूल की शिक्षा पूरा कर विवेकवर्धिनी कॉलेज में पी.यू.सी कोर्स में प्रवेश हुए। उसमानीया विश्वविद्यालय में बी.ए में प्रवेश होने के बावजूद आर्थिक कारणों से बी.ए पूरा नहीं कर पाये। तेलंगाना में उन दिनों में हुए कम्युनिस्ट, किसान और छात्र आन्दोलनों से प्रभावित होकर कम्युनिज्म की ओर आकर्षित हुए और भाकपा पार्टी में शामिल हो गये। खान साहेब ने तेलंगाना सशस्त्र आन्दोलन के समय एक प्रमुख कम्युनिस्ट नेता और कवि हैदराबाद निवासी कामरेड मकदुम महयुद्दीन के कुरियर का काम भी किया। महयुद्दीन का प्रभाव खान साहेब पर रहा। खान साहेब ने प्रगतिशील लेखक संघ में शामिल हुए और संस्कृतिक क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया।

सन् 1964 में जब भाकपा दो पार्टियों में विभाजित हो गया। संशोधनवाद से सम्पूर्ण रूप से नाता तोड़कर माकपा भारत की क्रान्ति का नेतृत्व करने की आशा से खान साहेब माकपा में शामिल हुए। लेकिन वह माकपा से भी निराश हो गये क्योंकि माकपा संशोधनवादी मार्ग पर ही चल रही थी। सन् 1967 में उभरे नक्सलबाड़ी आन्दोलन और सन् 1968 के श्रीकाकुलम आन्दोलनों से प्रेरणा लेकर उन्होंने नक्सलबाड़ी मार्ग पर चलने का फैसला लिया। उस मार्ग पर चलने का निर्णय लेने के बाद वे कभी भी नहीं डगमगाये और दृढ़संकल्प के साथ आगे बढ़े।

सन् 1972 में कामरेड चारू मजुमदार शहीद होने के बाद आन्दोलन को गतिरोध का सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों में पार्टी ने आन्दोलन को फिर से रास्ते पर लाने के लिए कोशिश किया। उस समय में पार्टी लाईन के पक्ष में खड़ा होने वालों में खान साहेब भी एक थे। सन् 1972 में आन्ध्र राज्य कमेटी ने 'पिलूपू' (आह्वान) पत्रिका को प्रकाशित करना शुरू किया। बहुत कठिन परिस्थिति में भी खान साहेब ने उस निर्णय को बड़ी जिम्मेदारी से निभाया। पत्रिका के माध्यम से दीर्घकालीन लोकयुद्ध के पक्ष में कार्यकर्ताओं को जुटाने का काम शुरू किया। दक्षिणपंथी अवसरवादी लोग चारू मजुमदार को निन्दा करते हुए प्रचार कर रहे थे। कुछ विघाटनकारी शक्तियां पूरे आन्दोलन का खात्मा करने के लिए कोशिश कर रहे थे। इन परिस्थितियों में 'पिलूपू' पत्रिका द्वारा राजनीतिक और सैद्धांतिक बहस चलाके उन सभी शक्तियों को मुहतोड़ जवाब दिया था। सही कार्यकर्ताओं को जुटाया भी था। सरकारी दमन के चलते कुछ लोग आन्दोलन छोड़ गये थे। ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी खान साहेब ने बहुत अच्छा काम किया।

सन् 1973 में 'मीसा' के नाम पर उन्हें गिरफ्तार किया गया और 1974 में एक षड़यंत्र केस लगाया गया। आपातकालीन समय में उन्हें सरकार ने जेल में रखा था। राजनीतिक और सैद्धान्तिक बहस के लिए उन दिनों में जेल एक केन्द्र बन गया था। ऐसे राजनीतिक उलझन के परिस्थितियों में सही मार्ग पकड़ना आसान नहीं है। ऐसे राजनीतिक बहसों के जरिए खान साहेब सही मार्ग पर खड़े हुए थे और वह इस अनुभव से और भी ज्यादा फौलादी बनकर निकले।

सन् 1970 में क्रान्तिकारी लेखक संघ की स्थापना में खान साहेब भी शामिल थे। 1971 में इस संगठन का पहला सम्मेलन इनकी अगुवाई में हुआ। इस संगठन ने नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम आन्दोलनों के पक्ष में प्रचार किया और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की सिद्धान्त को भी जबर्दस्त रूप में प्रचार किया। 1974 में ए.पी.सी.एल.सी को गठन करने में और उसको विस्तार करने में उन्होंने अहम भूमिका निभाया। खान साहेब 1992 से 1998 तक उस संगठन के अध्यक्ष के रूप में रहे। उन दिनों वेंगलराव सरकार ने जनता के ऊपर क्रूर दमन चलाया और फर्जी मुठभेड़ों में

बहुत कार्यकर्ताओं को मार दिया था। इसके खिलाफ खान साहेब ने अपनी आवाज उठायी।

भाकपा और माकपा की नेतृत्व वाली जनसंगठन सुधारवादी दलदल में फंस गये थे। इस कारण नक्सलबाड़ी समय में जनसंगठनों का निर्माण नहीं किया गया था। ये सभी परिस्थितियों को समीक्षा करके आन्ध्रप्रदेश में जनसंगठनों का निर्माण शुरू किया गया था। इस सिलसिला में नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम आन्दोलनों को समर्थन देने वाले लेखकों और जनवादियों को लेकर क्रान्तिकारी लेखक संघ और ए.पी.सी.एल.सी को निर्माण किया गया था। राजनीतिक बहस और लड़ाई में शामिल होते हुए इन संगठनों को उन्होंने सुधारवादी दलदल में पड़ने नहीं दिया। आन्ध्रप्रदेश की जनता का क्रान्तिकारी और जनवादी चेतना बढ़ाने में इन संगठनों का योगदान अहम है। इसमें खान साहेब की भूमिका अविस्मरणीय है।

भारत-चीन मित्र मंडली में खान साहेब चीन समाजवादी देश रहने तक सदस्य के रूप में थे। चीन संशोधनवादी बनने के बाद वे मित्र मंडली से हट गये। हैदराबाद में साम्प्रदायिक दंगों के खिलाफ बनी कई संगठनों में उन्होंने भाग लिया। फर्जी मुठभेड़ों के खिलाफ आन्दोलन में, राजनीतिक बंदियों की रिहाई आन्दोलन में, अलग तेलंगाना राज्य आन्दोलन में और कई जनवादी आन्दोलनों में उन्होंने भाग लिया था।

मानवाधिकार, कला, साहित्य और नाट्क आदि क्षेत्रों में उनकी रूचि थी। इन क्षेत्रों में उन्होंने विशेष काम किया। वह एक कवि भी थे और उन्होंने कई कविताएं लिखे। उन्होंने कई रचनाओं को उर्दू में अनुवाद किया। हैदराबाद में मुसलमान जनता के बीच उर्दू में क्रान्तिकारी राजनीतिक परचा लिखकर प्रचार किये। 'सियासत' जैसे उर्दू पत्रिकाओं और 'न्यूज़ टाईम' जैसे अंग्रेजी पत्रिकाओं को ऐतिहासिक द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषण किये गये लेख भेजते थे।

खान साहेब ने छः दशक से जनता के बीच रह कर अनेक जिम्मेदारियां निभाये। आन्दोलन के मुख्य मोड़ों पर अहम भूमिका निभाये। साम्यवादी समाज की स्थापना के लिए बहुत कठिन कामों को भी उन्होंने पूरा किया। क्रान्तिकारी लेखक संघ, ए.पी.सी.एल.सी के मुख्य स्तंभ के रूप में रहते हुए, आन्ध्रा और तेलंगाना में अनेक आन्दोलनों में शामिल होते हुए नौजवानों को प्रेरित किया। उनके कुछ समकालीन लोग मार्क्सवादी सिद्धांत पर विश्वास खोकर और पारिवारिक दबाव में फंसकर आन्दोलन से अलग हो गये और स्वार्थी बन गये। पिछले दशक में आन्ध्रप्रदेश में क्रान्तिकारी आन्दोलन की नेतृत्व की लगातार नुकसान के परिस्थितियों में जनसंगठनों के नेतृत्व को लचीलापन और दृढ़ता के साथ काम करने की आवश्यकता थी। खान साहेब जैसे साथियों ने ये काम अच्छी तरह निभाये थे। ये तरीका आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल है। सैद्धान्तिक रूप से इसकी जरूरत को साफ तौर पर जाहिर करने के बावजूद क्रान्तिकारी आन्दोलन ने मुसलमान जनता के बीच में उतना पकड़ नहीं बना सकी है। इस परिस्थिति में खान साहेब जैसे लोगों की जरूरत ज्यादा हैं। खान साहेब के अधूरे सपनों को पूरा करना उनके प्रति असली श्रद्धांजलि होगी। उनके जीवन के बारे में मुसलमान जनता के बीच प्रचार कर उन्हें प्रेरित करना चाहिए। राज्य व्यवस्था हिन्दू फासीवादी रूप लेते हुए मुसलमानों को लक्ष्य बना कर खतरे में डालने की आज की परिस्थिति में खान साहेब की जीवनी को उन लोगों के बीच प्रचार कर उनको आन्दोलन की ओर आकर्षित करना होगा। साम्राज्यवाद की उपभोक्तावादी संस्कृति आज जब चरम पर है, ऐसी परिस्थिति में जनता से प्यार करना और एक सरल जीवन बिताना तथा अपनी जड़ों को न भूलना एक महान आदर्श है। जिंदगीभर आर्थिक समस्याओं से जूझने के बावजूद खान साहेब ने अपने आप को क्रान्तिकारी उद्देश्यों से अलग होने और कभी भी क्रान्तिकारी उत्साह को कम होने नहीं दिया।

इस देश में आजादी के लिए, जनवाद के लिए और लूट-खसोट की व्यवस्था के उन्मूलन के लिए हजारों शहीदों के साथ-साथ खान साहेब के अधूरे सपनों को साकार करने के लिए भाकपा(माओवादी) की केन्दीय कमेटी फिर एक बार शपथ लेती है। नवजनवादी समाज की स्थापना ही उनके प्रति असली श्रद्धांजलि होगी। हमारा अनुरोध है कि हर एक क्रान्तिकारी कार्यकर्ता खान साहेब की जीवनी से प्रेरणा लेकर उनके दिखाये मूल्यों व सरल रहन-सहन को आत्मसात कर उनके राह पर आगे बढ़ें। हम सभी से अपील करते हैं कि हमारे प्यारे खान साहेब के स्मृतियों और उनके आदर्शों को जिंदा रखे और उन्हें प्रचारित करें।

क्रान्तिकारी अभिनन्दन के साथ

Abhay

(अभय)

प्रवक्ता, केन्द्रीय कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)